मई–जून 2020

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

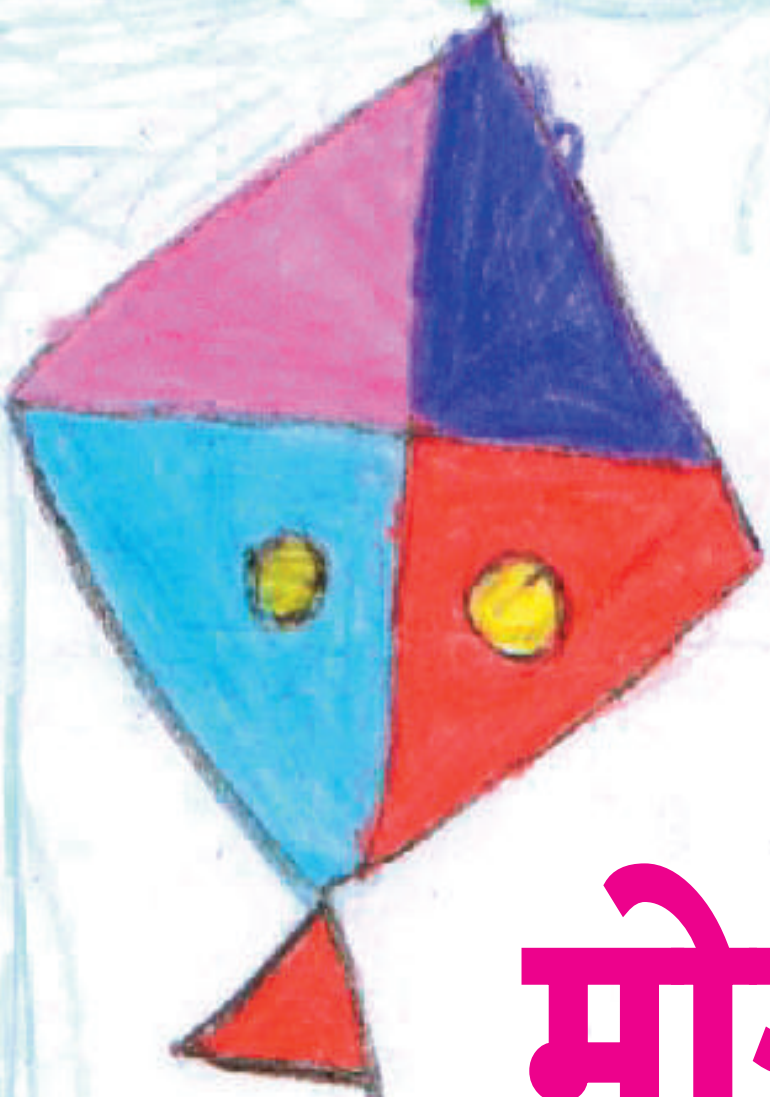

मोरंगे

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 मूल्यों का सेतू है खेल

उड़ान

7 विज्ञान को जानो

8 पेड़ बचाओ

9 मेहनत का फल

10 खरगोश और उसके दोस्त

ज्ञान विज्ञान

12 क्या है विज्ञान?

13 विज्ञान में ध्वनि संचरण

जोड़–तोड़

14 मैंने जोड़ घटाव कैसे किया

15 बहुभुज का समझ

कलाकारी

16 चेतना का आत्मविश्वास

बात लै चीत ले

18 मेरा पहला दिल्ली मेट्रो सफर

21 माथापच्ची / हीहीही–ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ

मनीष सैनी, उम्र–7 वर्ष, समूह–सितारा

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : मानसिंह सिर्रा
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **अमर सिंह**, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय खण्डोल
वर्ष 11 अंक 119–120

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

सुनीता नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाषन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

मूल्यों का सेतू है खेल

कोमल बैरवा, उम्र–8 वर्ष, समूह–लहर

जनवरी का महिना था। मैं सवाई माधोपुर से अपने रोज के निर्धारित समय सुबह 7 बजे वाली बस से उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया के लिए रवाना हुई। आज बस में अन्य दिनों की अपेक्षा सवारियाँ ज्यादा भरी हुई थी। बोदल गाँव से पहले पहुँचते ही अचानक हमारी बस पिंक्चर हो गई। इस को ठीक करने में ज्यादा समय लगने के कारण मैं लगभग 30 मिनट देरी से विद्यालय पहुँची। वैसे हमारे स्कूल का शैक्षिक समय सुबह 9 बजे का था। परन्तु खेल वाले बच्चे समय से 1 घंटा पहले ही आ जाते थे। स्कूल में पहुंचते ही मैंने देखा कि सभी बच्चे पूर्ण उत्साह के साथ हैण्डबॉल का अभ्यास कर रहे थे। मैं मैदान तक पहुँच गई पर मेरे आने का किसी को ध्यान तक नहीं था कि मेडम आ गई। मैं भी चुपचाप कुछ पल सभी बच्चों के साथ इस उत्साहपूर्ण अभ्यास को देखकर दंग रह गई कि बच्चे कितने अनुशासन से इस खेल का अभ्यास कर रहे थे। तभी अचानक आरती नामक बालिका का ध्यान मेरी और पड़ा और कहा, मंजू देख मेडम आ गई। मंजू मेरी और देखने लगी कि उससे सुनीता टकरा गई और मंजू मैदान में गिर गई तथा उसके पैर में चोट लगने

के कारण खून बहने लगा। मैं दौड़कर मंजू के पास गई और चोट वाली जगह पर अपना हाथ लगाकर खून को रोकने का प्रयास करने लगी। पर उसके चोट वाले स्थान पर कंकर की लगने से घाव कुछ ज्यादा था। मैंने बच्चों से कपड़ा लाने को कहा तो आरती ने तुरंत अपनी चुन्नी लाकर मेरे को दे दी। मैंने कहा अरे कोई और कपड़ा नहीं है क्या? नहीं मेडम आप तो इसको ही काम में ले लो। मैंने तुरंत चोट वाले स्थान पर चुन्नी लगा दी। थोड़ी देर बाद खून रूकना बंद हुआ तो मैंने उसके चोट वाले स्थान की डिटोल से सवाई कर दी। इतने में राजेश जी भी आ गये और मंजू तथा आरती को बहरावण्डा ले गये तथा पट्टी करवाकर वापिस ले आये। मैंने आरती से कहा देख तेरी सारी चुन्नी खराब हो गई तो आरती ने इतनी कम उम्र

दीपिका मीना, उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा

में जो मेरे से कहा उसे मैं आज तक नहीं भुला पाई। उसे कहा, ''चुन्नी का क्या यह तो फिर आ जायेगी पर मंजू के अगर ज्यादा खून निकल जाता तो वह क्या दोबारा आता? आखिर कक्षा 4 में पढ़ने वाली इस बच्ची ने जो कहा उसका जवाब देने की बजाय मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा और उसकी बात का समर्थन किया। खेल का मैदान मात्र हार–जीत के लिए दम खन दिखाने की जगह नहीं है। यहाँ विरोधी के लिए मदद, सम्मान और संवेदनायें भी विकसित होती हैं।

ममता शर्मा, शारीरिक शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

विज्ञान को जानो

एक दुनिया है इतनी सुंदर
इंसानों का डेरा उसके अंदर
इसमें रहते कई जानवर
कोई खाता घांस हरा
कोई खाता मांस जरा
शेर मांस तो गाय घांस खाती
भूख से ज्यादा कोई ना लेता
पेट भर फिर मौज उड़ाते
मानव दुनिया का ऐसा जीव
घांस, मांस, रोटी, सब्जी
कंद मूल, फल, फूल
जो भी मिलता चट कर जाता
सर्वाहारी वह कहलाता।

काजल बैरवा, उम्र–12 वर्ष, समूह–हरियाली

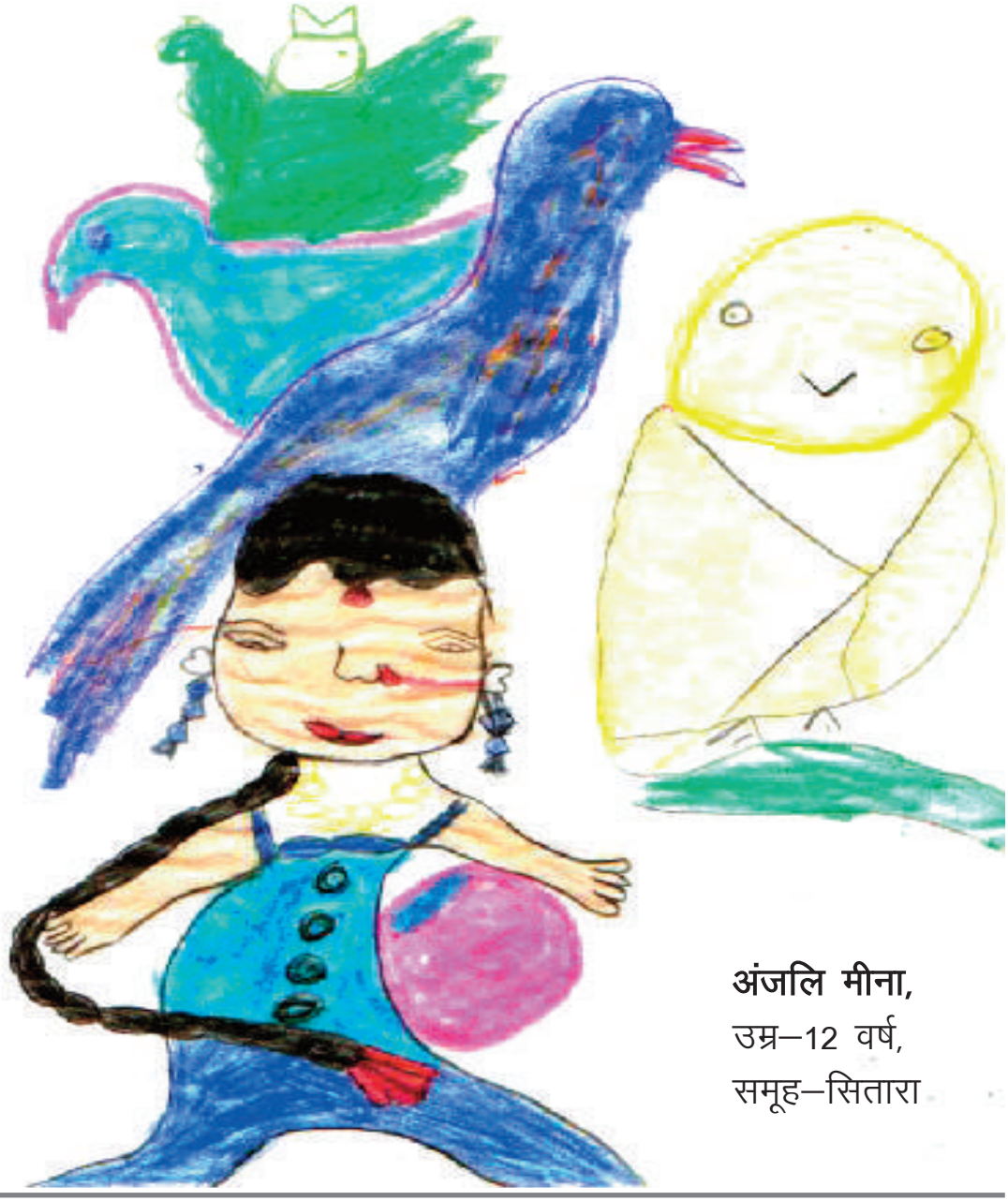

अंजलि मीना,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सितारा

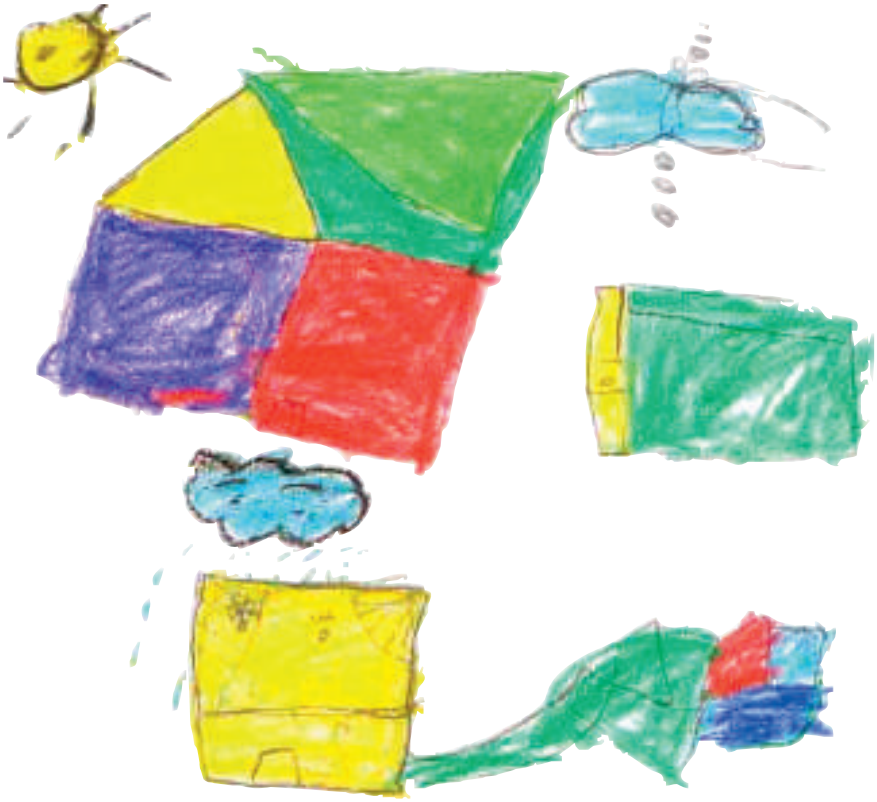

ज्योति,
उम्र–6 वर्ष,
समूह–सावन

पेड़ बचाओ

सुने न कोई पुकार हमारी
एक रात फिर ऐसी आई
जंगल पर संकट की छायां छाई
जंगल सोचे क्या होगा आगे?
यह कैसी मुसीबत है आई
अकाल की घोर घटा है छाई
नदिया भी डर कर घबराई
जीवन अंत हमारा होगा
फिर दुनिया का क्या होगा?
पेड़ काटकर जनता सोयेगी
दुनिया आँखों के मोती खोयेगी।

आरती बैरवा, उम्र–13 वर्ष,
समूह–हरियाली

मेहनत का फल

एक बार की बात है। एक बहुत बड़ा घर था। उस घर के मालिक का नाम मन. मोहन था। उसके घर में एक नौकर था। उस नौकर का नाम राम था। वह बहुत ईमानदार और वफादार था। एक दिन राम अपने मालिक के पास गया और बोला कि मालिक मुझे मेरे परिवार की बहुत याद आ रही है। क्या मैं अपने परिवार से मिलने जा सकता हूँ? मनमोहन ने कहा कि जा तो सकते हो परन्तु दस दिन के भीतर ही वापस आ जाना। राम ने कहा ठीक है। फिर वह अपने गांव के लिए चल दिया। अपने गांव के रास्ते में उसे एक सूखा पेड़ दिखाई दिया। उसने सोचा कि क्यों ना मैं इस पेड़ में पानी डाल दूं? पास ही में एक कुआ था। राम ने कुए में से बाल्टी और रस्सी की मदद से पानी खींचा और पेड़ में डाल दिया। वह बहुत थक गया था। उसने सोचा कि मैं कुछ देर यहीं पर आराम कर लेता हूँ। फिर राम उसी पेड़ के नीचे आराम करने के लिए लेट गया। कुछ समय बाद जब उसकी आंख खुली तो उसने फिर से पेड़ में एक बार और पानी डाल दिया। स्वयं भी कुए से पानी पीकर अपने गांव के लिए चल दिया। घर पहुंचा तो उसके परिवार के सब लोग खुश हुए। अपने परिवार को खुश देखकर उसका मन भी प्रसन्न हुआ। राम कुछ दिनों बाद वापस अपने मालिक के यहां जाने के लिए तैयार हुआ। जब वह वापस आ रहा था तो उसे रास्ते में वही पेड़ दिखाई दिया। उसमें बहुत सारे फल आ रहे थे। राम यह देखकर बहुत खुश हुआ।

आरती नायक, उम्र–10 वर्ष, समूह–सूरज।

मनीषा सैनी,
उम्र–12 वर्ष, समूह–सितारा

खरगोश और उसके दोस्त

एक किसान के पास एक गाय और एक घोड़ा था। वे दोनों एक साथ जंगल में घांस चरने जाते थे। किसान के पास एक धोबी भी रहता था। धोबी के पास एक गधा और एक बकरी थी। धोबी भी उन्हें उस जंगल में घांस चरने के लिए छोड़ देता था। चारों पशुओं का जंगल में एक साथ घांस चरने जाने और वहां से वापस

खुशी गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारा

आने के कारण वे आपस में बातचीत करते। अपने मन की बातें एक दूसरे को सुनाते। इस तरह से उन चारों पशुओं में आपस में दोस्ती हो गई। उस जंगल में एक खरगोश भी रहता था। उस खरगोश ने अपने मन में सोचा कि इन चारों से मेरी दोस्ती हो जाये तो कितना अच्छा होगा? और जंगल के जंगली कुत्ते जो मुझे परेशान करते हैं वे मुझे परेशान नहीं करेंगे। खरगोश उन चारों के पास गया, जहां वे घांस खाते थे। वहां जाकर बार–बार उछलता कूदता और उन्हीं के साथ घांस खाया करता था। कुछ दिनों के भीतर ही उन सब की खरगोश से भी मित्रता हो गई। अब खरगोश बड़ा खुश हुआ। उसने समझाा कि जंगली कुत्ते का भय दूर हो गया है। एक दिन जंगली कुत्तों का झुंड शिकार की तलाश में वहां आ गया। वहाँ

पर खरगोश रहता था। खरगोश उन्हें देखकर दौड़ने लगा। उसे पीछे जंगली कुत्तें का झुण्ड भी दौड़ने लगा। खरगोश दौड़ता हुआ गाय के पास गया और गाय से बोला कि आप इन कुत्तों से मेरी रक्षा करो और अपने सींगों से इनको मारकर भगा दो। गाय बोली भाई तुम बहुत देरी से आये हो शाम हो गई और मेरे घर लौटने का समय हो गया है। मेरी बछड़ी भी भूखी होगी और वो मुझे पुकार रही होगी। मुझे घर जाने की जल्दी है तुम घोड़े के पास जाओ। खरगोश दौड़ता हुआ घोड़े के पास गया और घोड़े से बोला घोड़ा भाई क्या आप मुझे अपनी पीठ पर बैठा लोगे? वे जंगली कुत्ते मेरे पीछे पड़ गये हैं। घोड़ा बोला कि तुम्हारी बात तो ठीक है। किन्तु मुझे जमीन पर बैठना नहीं आता है। मैं तो खेड़े–खड़े ही सोता हूँ। घोड़ा बोला कि तुम पीठ पर कैसे बैठोगे? खरगोश वहां से गधे और बकरी के पास गया और उसने सारी बात उन दोनों को सुनाई। गधा बोला हम प्रतिदिन घोड़े और गाय के साथ ही घर वापस जाते हैं। यदि हम उनके साथ नहीं जायेंगे तो हमारा मालिक नाराज हो जायेगा। फिर बगरी को एक युक्ति सूझी उसने खरगोश से कहा आप क्यों न यहां की झाड़ियों में छिप जायें? खरगोश को बकरी की ये बात अच्छी लगी और वह झाड़ियों में जाकर छिप गया। जंगली कुत्ते उसे सब जगह ढूंढते रहे लेकिन उन्हें खरगोश नहीं मिला। जंगली कुत्ते वापस लौट गये। खरगोश ने झाड़ी में से निकलकर संतोष की सांस ली।

टीना बैरवा, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय पालीघाट

कृष्णा बैरवा, उम्र–11 वर्ष, समूह–लहर

क्या है विज्ञान?

आओ ले लो थोड़ा सा ज्ञान
पढ़ लो थोड़ी सी विज्ञान
विज्ञान में मिलते अच्छे सहायक
हम पढ़ेंगे अम्ल और क्षारक
खट्टी चीजें जो भी खाता
उनमें हमेशा अम्ल ही पाता
गेंद के साथ जैसे बल्ला होता
अम्ल का स्वाद खट्टा होता
कड़वी चीज जो भी खाता
उनमें हमेशा क्षारक ही पाता
नमक में क्षारक का तड़का
क्षारक का स्वाद होता है कड़वा
मेरे दिमाग में जितना आया
मुझको तो बस इतना सिखाया
ले लो थोड़ा सा ज्ञान
और पढेंगे हम विज्ञान।

काजल बैरवा,
उम्र–12 वर्ष, समूह–हरियाली

विशाल बैरवा,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–लहर

साक्षी मीना, उम्र–6 वर्ष,
समूह–रिमझिम

विज्ञान में ध्वनि संचरण

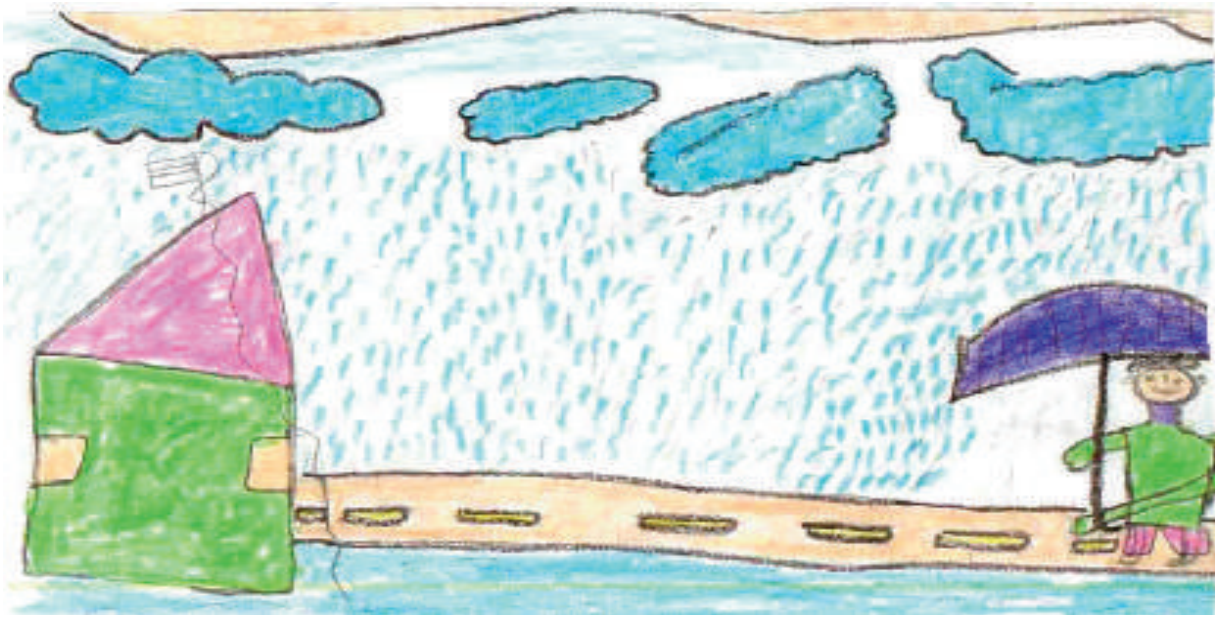

रामअवतार गुर्जर, उम्र–10 वर्ष, समूह–झरना

क्या आपको पता है कि विज्ञान हमारे लिए कितना आवश्यक है? हम विज्ञान के माध्यम से पर्यावरण को जान सकते हैं। हम पर्यावरण और हमारे चारों और घटित घटनाओं को हम विज्ञान में प्रयोग करके और वास्तविक में उासकी जानकारी ले सकते हैं। हमारे पर्यावरण में पॉलीथीन से बहुत नुकसान है और इसके साथ–साथ हमें और हमारे परिवेशीय जानवरों को भी नुकसान है। हम आपको बताते हैं। जब हम पॉलीथीन को इधर–उधर फेंक देते हैं। उस पॉलीथीन को जानवर खा जाते हैं और वह उनके शरीर को नुकसान करती है। इसी के साथ हम जब पॉलीथीन को जला देते हैं तो उसका धुंआ पर्यावरण और मनुष्य दोनों को ही नुकसान पहुँचाता है। अब हम विज्ञान पर आते है। हम विज्ञान को कितना भी पढ़ें लेकिन हम विज्ञान को प्रयोग के माध्यम से ही सीख सकते हैं। हमने विज्ञान में ध्वनि के उत्पन्न होने का प्रयोग ठोस में इस प्रकार किया। जब हम किसी वस्तु को ठोस वस्तु पर मानते हैं तो उसमें से ध्वनि उत्पन्न होती है। इस प्रकार से मैंने जो प्रयोग स्कूल में सीखा उसी को अपने घर वालों को भी बताया। फिर मैंने एक थाली ली और उसको उल्टा किया और उस पर छोटे–छोटे कागज की गोली बनाकर उस पर रख दी। फिर एक चम्मच को लेकर चम्मच से थाली पर बजाना शुरू किया तो थाली में से ध्वनि उत्पन्न होने लगी और ठोस से कण में संचरण होने लगा। इसकी प्रमाणिकता यह थी की कागज की गोलियाँ नाचने लगी यानी की वे भी हिलने लगी।

जयसिंह मीना, उम्र–14 वर्ष, समूह–हरियाली।

आरती बैरवा, उम्र–11 वर्ष, समूह–हरियाली

मैंने जोड़ घटाव कैसे सीखा

पहली बार जब मैं स्कूल आया तो मुझे अच्छा नहीं लगा और मैं मध्यान्तर में ही घर चला गया। उस स्कूल का नाम है – उदय सामुदायिक पाठशाला कटार। उस समय मेरी उम्र 6 या 7 वर्ष की थी। जब मेरे शिक्षक मेरे घर पर सम्पर्क करने आते तो मैं अपने घर में छिप जाता। मेरे श्क्षिक मेरी मां से कहते की आप गोविन्द को विद्यालय भेजा करो। फिर मेरी माँ मुझे स्कूल छोड़ने के लिए आती थी। जब मैं स्कूल आता और यहाँ पर शिक्षक मुझे बड़े प्यार से पढ़ाते, खेल खिलाते तब मेरा मन विद्यालय में लगने लगा। मुझे आज भी याद है कि मैंने हिन्दी में आम, घर, जग, चकला सीखा। उसके बाद गणित में गणना का काम किया। जब मैं घर जाकर अपनी मम्मी को बताता कि मैं ये सीख गया हूँ तो मेरी मां मुझे प्रतिदिन स्कूल भेजने लगी। अगले स्तर में कक्षा 2 में पढ़ने लगा। जहाँ मेरे शिक्षक बेनी जी थे। उन्होंने मुझे गणित में जोड़ घटाव को ठोस में सिखाया। उन्होंने मुझे जोड़ ऐसे सिखाया। उन्होंने कुछ कंकर मेरे सामने रखे और कहा कि इन्हें गिनो मैंने इन्हें गिन लिया उसके बाद उन्होंने कुछ कंकर उसमें मिलाने के लिए दिये और कहा कि अब इन सबको गिनो इस तरह से उन्होंने मुझे जोड़ सिखाया। जैसे पहले उन्होंने मुझे 7 कंकर दिये फिर उन्होंने उसमें मुझे 4 कंकर और मिलाने के लिए दिये। इस तरह से कुल कंकर 11 हो गये। इसके बाद उन्होंने मुझे बहुत सारे कंकर दिये और एक वर्कशीट दी उसमें कंकरों की संख्या दी हुई थी और उनमें कुछ नये कंकर मिलाकर कुल कंकर कितने हुए ये पता लगाना था। जब मुझे जोड़ करना आ गया। उसके बाद शिक्षक ने मुझे घटाव करना सिखाया। जिसमें भी उनहोंने मुझे कुछ कंकर दिये और कहा कि मैं इन्हें गिनूँ मैंने इन्हें गिना उसके बाद उन्होंने उसमें से कुछ कंकर निकालकर अलग करके जमीन पर रखने को कहा उसके बाद मेरे हाथ में जितने कंकर हैं उन्हें गिनने को कहा। इस तरह से मैंने घटाव करना सीखा।

गोविन्द नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज।

मनीषा मीना, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय जमूलखेड़ा

बहुभुज की समझ

बहुभुज की अवधारणा को ठोस में बच्चे को किस तरह से सिखायें। शिक्षक ने बच्चों को लकड़ी के चौकोर टुकड़े पर कुछ किले लगा कर दी। जो कि एक दूसरे से समान दूरी पर थी। उसके बाद उसने बच्चों को कुछ रबर दिये और कहा कि आप इन रबर बंद को लेकर कुछ आकृतियाँ बनायें जो आपने पहले कॉपी में, दीवारों पर या किताबों में देखी है। बच्चों ने भिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाना शुरू कर दिया। जब बच्चे आकृतियाँ उस लकड़ी के टुकड़े पर बना रहे थे तो आपस में अपने दोस्तों से कह रहे थे कि मैंने अपने स्कूल की टापरी के सामने से दिखने वाला भाग बनाया है। जिसमें की उसने दो रबर बेंड को काम में लिया। एक रबर से उसने त्रिभुज की आकृति और उसी के नीचे उसने चौकोर वर्ग की आकृति को बनाया। ऐसे ही एक बच्चे ने अपने कमरे का फर्श बनाया जो कि आयत की आकृति का था। शिक्षक ने हर आकृति पर चर्चा की जिसमें की आकृति को बनने में कितनी भुजाओं का उपयोग हुआ है। जैसे टापरी में कितनी भुजायें दिख रही हैं। रबर बैंड की? इसी प्रकार से फर्श की जो आकृति बनाई है। उसमें कितनी भुजायें बन रही हैं रबर बेण्ड की। बच्चों ने बताना शुरू किया कि हमें तीन, चार दिखाई दे रही है। इसी बीच एक बच्चे ने बताया कि सर ये टापरी वाली आकृति में छ भुजायें हैं। शिक्षक ने पूछा कि कैसे बच्चे ने बताया कि हमने जो टापरी की आकृति बनाई है उसको अगर हम अलग करके नहीं गिने तो हम इसमें छः भुजायें पायेंगे। फिर सभी बच्चों ने इसे गिना। इसके बाद शिक्षक ने कहा कि चलो आप अब दो रबर से आकृतियाँ बनाकर एक ही रबर से ऐसी आकृति बनाओ जिसमें की तीन और चार से अधिक भुजायें हों। बच्चों ने फिर से काम शुरू किया। बच्चों ने इस बार फिर से टापरी की आकृति बनाई लेकिन इस बार टापरी की आकृति में पांच भुजायें दिख रही थी। इसी प्रकार से बच्चों ने छः, सात और आठ भुजाओं की आकृतियाँ बनाई। शिक्षक ने बच्चों को बहुभुज से परिचत करवाने में त्रिभुज, चतुर्भुज जो कि वे पहले से जानते थे लेकिन बहुभुज के बारे में जिओ बोर्ड की मदद से समझाया तो वे आसानी से सीख गये। उसके बाद बच्चों ने स्वयं से आकृति बनाई और उसमें कोने (शीर्ष) किनारे, भुजायें बनाते हुए बहुभुज को समझा।

तरूण कुमार शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

चेतना का आत्मविश्वास

एक दिन मैं कक्षा में सभी के साथ कहानी लेखन पर कार्य करवा रहा था जिसमें सभी से कहा कि आप स्वयं से कोई भी एक कहानी लिखेंगे। सभी ने अपने–अपने अनुभव से कहानी लिखी। चेतना ने भी एक कहानी लिखी। अगले दिन सभी ने लिखी हुई कहानियों को कक्षा में सुनाया। अंत में कहानी सुनाने की बारी चेतना की आई तो सभी बच्चे चेतना की और देखने लगे। क्योंकि सभी बच्चे उसकी कहानी की जो आवाज थी उसको सुनना चाहते थे कि चेतना कहानी सुनाते समय कैसे बोलती है। चेतना में बोलने की झीझक थी जिसके कारण उसने कहानी सुनाने से मना कर दिया। सभी बच्चे कहने लगे सर इससे भी कहानी बुलवाओ, नहीं तो कल से हम भी कहानी लिखेंगे पर सुनायेंगे नहीं। अब मेरे सामने यह एक और समस्या आ खड़ी हुई। मैंने चेतना से कई बार कहा कि तुम्हें जैसे भी आता है। पढ़कर सुनाओ पर चेतना मेरी एक नहीं मानी। चेतना यह सोच रही थी मेरे द्वारा लिखी गई कहानी और की अपेक्षा अच्छी नहीं है। इसलिए सुनाने पर सभी हंसी करेंगे। इससे अच्छा है कि मैं चुप ही रहूँ। मैंने कक्षा के वातावरण और चेतना की भावना को समझते हुए यह निश्चय किया कि चेतना की कहानी को आज मैं बड़े हाव–भाव के साथ पढ़कर सभी को सुना

साक्षी बैरवा, कक्षा–6,
राजकीय विद्यालय मेईखुर्द

दूं। ताकि चेतना का अपने द्वारा लिखी कहानी के प्रति एक आत्मविश्वास बढ़ सके। मैंने वैसा ही किया और सभी बच्चों से बात की कि मैं आज चेतना के द्वारा लिखी कहानी को आपके सामने पढ़कर सुनाता हूँ। कल से चेतना स्वयं अपनी कहानी सुना देगी। ठीक है चेतना? चेतना ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ मेरी बात को शायद स्वीकार तो नहीं किया, पर उसे लगा कि आज का काम तो हुआ। अब इस कहानी को सुनाना मात्र ही मेरा मकसद नहीं रहा अपितु चेतना के आत्मविश्वास को एक नई ताकत देना तथा अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करना था। मैंने चेतना द्वारा लिखी कहानी को बड़े ही उत्साह और हाव–भाव के साथ सुनाया। सुनकर दो बच्चों

संजना माली, कक्षा–8,
राजकीय विद्यालय
कुतलपुरा मालियान

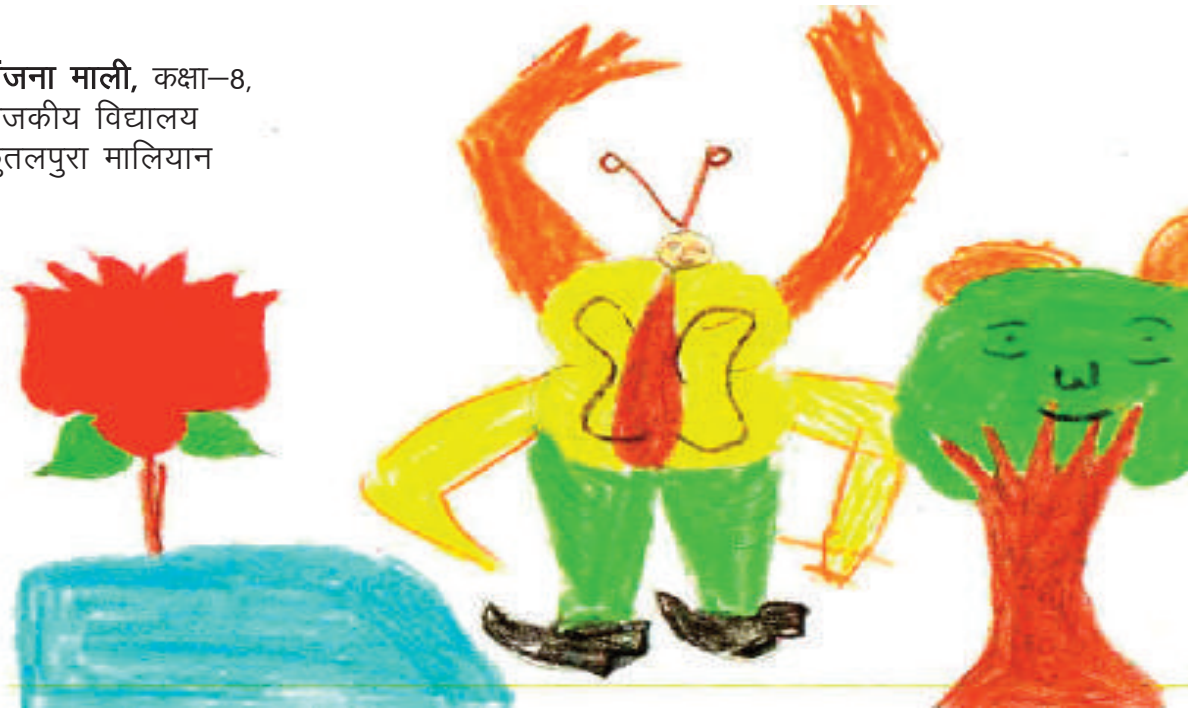

ने तो कहा चेतना ने कितनी अच्छी कहानी लिखी है सर। कहानी सुनाने के बाद मैंने उस कहानी पर चर्चा की और उसके सकारात्मक वाक्यों कि तारिफ की जिससे चेतना के चेहरे पर थोड़ी मंद मुस्कान नजर आई। आज का यह दिन चेतना के लिए आत्मविश्वास व अभिव्यक्ति की क्षमता के लिए वरदान साबित हुआ। अब चेतना बिना किसी झीझक के कक्षा व सभा में कहानी, गीत, कविता, पद आदि बोलने लगी है। अंत में उसने 5 फरवरी, 2020 को पाठशाला में आयोजित किलोल में मंच पर सब के सामने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपने एकल नृत्य व स्वयं द्वारा रचित कविता की शानदार प्रस्तुती दी। जिसको देखकर विद्यालय के सभी शिक्षक साथियों को बड़ी खुशी हुई कि चेतना ने अपनी झीझक की सभी बेड़ियों को तोड़ते हुए अपनी अभिव्यक्ति की क्षमता के लिए मंच पर जगह बनाई।

बेनी प्रसाद शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

मेरा पहला दिल्ली मेट्रो सफर

सुमीना माली, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय डांगरवाड़ा

13 मार्च को जब दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली में अपने साथी शिक्षकों के साथ शाम को घूम रहा था। उस समय मैंने अपनी साथी शिक्षकों से पूछा कि आज शाम को कहीं बाहर घमने चलें। कुछ साथी बोले की हम लोग इण्डिया गेट जायेंगे। कुछ बोले हम नहीं जायेंगे। फिर मैं और मेरे साथी अशोक जी करोल बाग घूमने के लिए निकल पड़े। सबसे पहले हमने वहां जाने का निर्णय इसलिए लिया कि हमें दिल्ली की मेट्रो ट्रेन देखनी थी। जो कि जमीन के अंदर और ऊपर चलती है। हमें वहाँ के स्टेशन भी देखने थे और वहां कई तरह की ट्रेन थी जो कि अलग–अलग रंग की थी ये भी देखना था। फिर हम केम्पस से ऑटो में बैठकर होज खास गये। वहाँ से हम लोगों ने मेट्रो ट्रेन टिकिट विण्डों से टिकिट लिया टिकिट 40 रूपये का आया। लेकिन हम दोनों को पता नहीं था कि हम करोल बाग कैसे पहुंचेंगे। फिर टिकिट वाले भैया से मैंने पूछा कि भैया किस नम्बर की मेट्रो ट्रेन में हमें बैठना है। उसने हमसे कहा कि मैंने अभी आपके बाद में करोल बाग का टिकिट इन सज्जन को दिया है। आप इनके पीछे–पीछे चले जाओ। फिर हम उनके पीछे चल दिये। हमने पूछा भैया क्या आप करोल बाग जारहे हो? उसने मना कर दिया। उसके बाद हमें चेकिंग मशीन द्वारा हमें चेक किया और अब हम चल दिये। हम दोनों को ही पता नहीं था कि हमें अब क्या करना चाहिए। फिर हम सीढियों से नीचे की तरफ गये। वहां बहुत ही अद्भुत नजारा था। जमीन के अंदर शानदार रेस्टोरेंट, एटीएम मशीन आदि थे। इसी के साथ में वहां कई लोगों की भीड़ थी जो कि आ और जा रहे थे। हम दोनों पहले

वहां का नजारा देखने लगे। उसके बाद हमने वहां पर खड़े पुलिसकर्मी से पूछा कि हमें करोल बाग जाना है। हम किस नंबर के प्लेटफार्म की ट्रेन में बैठें? फिर वो बोला कि आप राजीव चोक ऊतर जाना और वहां से ब्लू रंग की लाईन वाली ट्रेन में चढ़ जाना। फिर वो बोला कि ये जो येलो रंग के पैर बन रहे हैं उस पर आप चलते जाये । आपको जहां पर ये लेकर जायें वहां से डिस्प्ले बोर्ड पढ़ लेना। हम येलो रंग के पैर देखने लगे जो कि हमारे पैरों के नीचे ही थे। चुंकि अब तक हम केवल हमारे सामने और अगल–बगल में जो दिख रहा था उसे ही देख रहे थे फिर हम दोनों येलो रंग के पैरों के छाप को ध्यान में रखते हुए चलने लगे। चुंकि हमें कुछ अन्य रंग के पैर भी दिख रहे थे लेकिन पुलिस वाले ने कहा था कि आपको केवल येलो पैरों को ही फोलो करना है। हम फिर नीचे सीढियों की मदद से प्लेटफार्म पर आ पहुंचे। लेकिन मन में फिर से एक सवाल था कि टिकिट लिया है करोल बाग का और उतरना है राजीव चोक। फिर हमने डिस्प्ले बोर्ड से ट्रेन के सभी के सभी स्टेशन पढ़े और प्लेट फार्म 1 पर आने वाली येलो लाईन वाली ट्रेन में बैठ गये। उसके बाद हमने देखा कि ट्रेन में बहुत भीड़ थी। जैसे–तैसे हम ट्रेन में चढ़ गये। ट्रेन में लगे डिस्प्ले बोर्ड भी हमने पढ़ा। जहां पर हमने राजीव चोक उतरना होगा और ट्रेन में कम्प्यूटर सिस्टम द्वारा आने वाले नये स्टेशन की सूचना दी जा रही थी। और मैं मन में सोच रहा था कि हमें राजीव चोक से ट्रेन बदलनी होगी जो कि नीले रंग की होगी। फिर हम राजीव चोक पर उतर गये। उसके बाद हमने सोचा कि शायद हमारी नीली रंग की लाईन वाली ट्रेन सामने बने प्लेट फार्म नम्बर 2 पर आयेगी। लेकिन हमने देखा कि वहां हर तीन मिनट में केवल येलो लाईन वाली ही ट्रेन आ रही थी। इस तरह से हमने करीब तीन ट्रेनों को देखा। लेकिन नीली लाईनवाली ट्रेन नहीं आई। अब हम किस ट्रेन में बैठें, असमंजस में थे। अचानक हमारी निगाह सीढ़ियों की तरफ गई जहां पर नीली रंग के पैर ऊपर की तरफ जा रहे थे और यलो रंग के पैर नीचे की तरफ आ रहे थे। फिर हम दोनों नीले रंग के पैरों के पीछे–पीछे चल दिये और ऊपर की तरफ जा पहुँचे और हमने देखा कि वहाँ तो दूसरी ट्रेन आ रही थी। उस समय मैं फिर से नीचे की तरफ देखने लगा। जहां पर येलो लाईन वाली ट्रेन नीचे जमीन में (अण्डर ग्राउण्ड) चल रही थी और ऊपर की तरफ नीले रंग की लाईन वाली ट्रेन आ रही थी। वो नजारा भी देखने लायक था। जिसमें की जमीन के अंदर और ऊपर एक साथ ट्रेन चल रही है जो कि अलग–अलग स्टेशनों पर लोगों को ले जा रही है। फिर हम दोनों ने ऊपर जाकर फिरसे डिस्प्ले बोर्ड पढ़ा और हम प्लेट फार्म नम्बर एक से ट्रेन में चढ़ गये। वहां ट्रेन में हमने पढ़ा कि करोलबाग स्टेशन इस ट्रेन में बैठने से ही

प्रिया वैष्णव, कक्षा–6, राजकीय विद्यालय कुतलपुरा मालियान

आएगा। तब हम दोनों आपस में बातें करने लगे कि करोल बाग के लिए एक ही मेट्रो से नहीं जा सकते। होजखास से अगर करोल बाग जाना है तो हमें येलो और नीली लाईन की मेट्रो में बैठना होगा। और पैर के निशानों को भी ध्यान में रखना होगा। फिर हम वहां से बाहर आ गये बाहर आने से पहले हमने अपना टोकन मशीन में डाला। और हम बाहर आ गये। फिर हमने करोल बाग में बहुत सारी शोपिंग की मुझे शापिंग करते देखकर अशोक जी का भी मन हो गया और उन्होंने भी शोपिंग कर ली। फिर हम दोनों वापस आये तब हमने अच्छे से स्टेशन देखा और पैरों के निशानों को भी अच्छे से समझा। जब हम आते समय होजखास स्टेशन से बाहर निकल रहे थे उस समय हमें अचानक अन्य रंग के पैर भी दिखाई दिये। तब हमें समझ में आया कि हाज खास स्टेशन से अन्य रंग की लाईनवाली मेट्रों भी चलती है। इस प्रकार से मेट्रों का हमारा सफर जिसमें की पैरों के निशान हमारे सफर को यादगार बनाने में सफल रहे।

तरूण कुमार शर्मा, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

माथापच्ची

1. ऐसी कौनसी चीज है जो अगर चलते–चलते थक जाये तो उसकी गर्दन काटने पर वापिस चलने लग जाती है?
2. वो क्या है जो आपके सोते ही नीचे गिर जाती है? और आपके उठते ही वह भी उठ जाती है।
3. तीन पैरों वाली तितली, नहा धोकर कड़ाई से निकली।
4. दो एक जैसे लड़के, एक बिछुड़ जाये तो दूसरा बिल्कुल काम नहीं आये।

ममता जागा, शिक्षिका,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मनीषा,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–सितारा

हीहीही ठीठीठी

सलोनी यादव,
कक्षा–4, राजकीय विद्यालय डांगरवाड़ा

आज आलमारी खोली तो देखा गया कि सभी पेंट–शर्ट आपस में बाते कर रहे थे। अपने सेठ जी कहीं ओमशान्ति तो नहीं हो गये। यही बात रूमाल भी बोला। तो शर्ट बोली कि कहीं घूमने गये होंगे। मौजे के कानों में गई तो एक मौजा बोला वे हमें ले जाये बिना तो कहीं भी नहीं जा सकते। उनकी बात सुनकर नाईट पजामा बोला, अभी लोकडाऊन तक हमारी 24 घंटे की ड्यूटी लगी हुई है।

राजेश कुमावत,
शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

जब मैंने अपने घर के बाहर आकर देखा तो चारों और घोर सन्नाटा छा रहा था। तभी मेरा एक साथी मेरे पास आया और बोला भाई तुम इतने दिनों से कहाँ थे? क्या तुम्हें पता नहीं कि .....

वंदना सैन, *उम्र–12 वर्ष, समूह–हरियाली द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।*

मैंने खोली एक दूकान
उसमें बनाये पांच पकवान ..

रवीना शर्मा,
उम्र–9 वर्ष,
समूह–लहर
द्वारा शुरू की गई
इस कविता को
पूरा करके
मोरंगे को भेजें।

मोनिका मीना,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–उजाला

कपिल सैन, कक्षा–7, राज. उ. प्रा. विद्यालय डांगरवाड़ा

पहेलियों के ज़वाब –

1. पैंसिल 2. आँखों की पलकें 3. समोसा 4. जूते

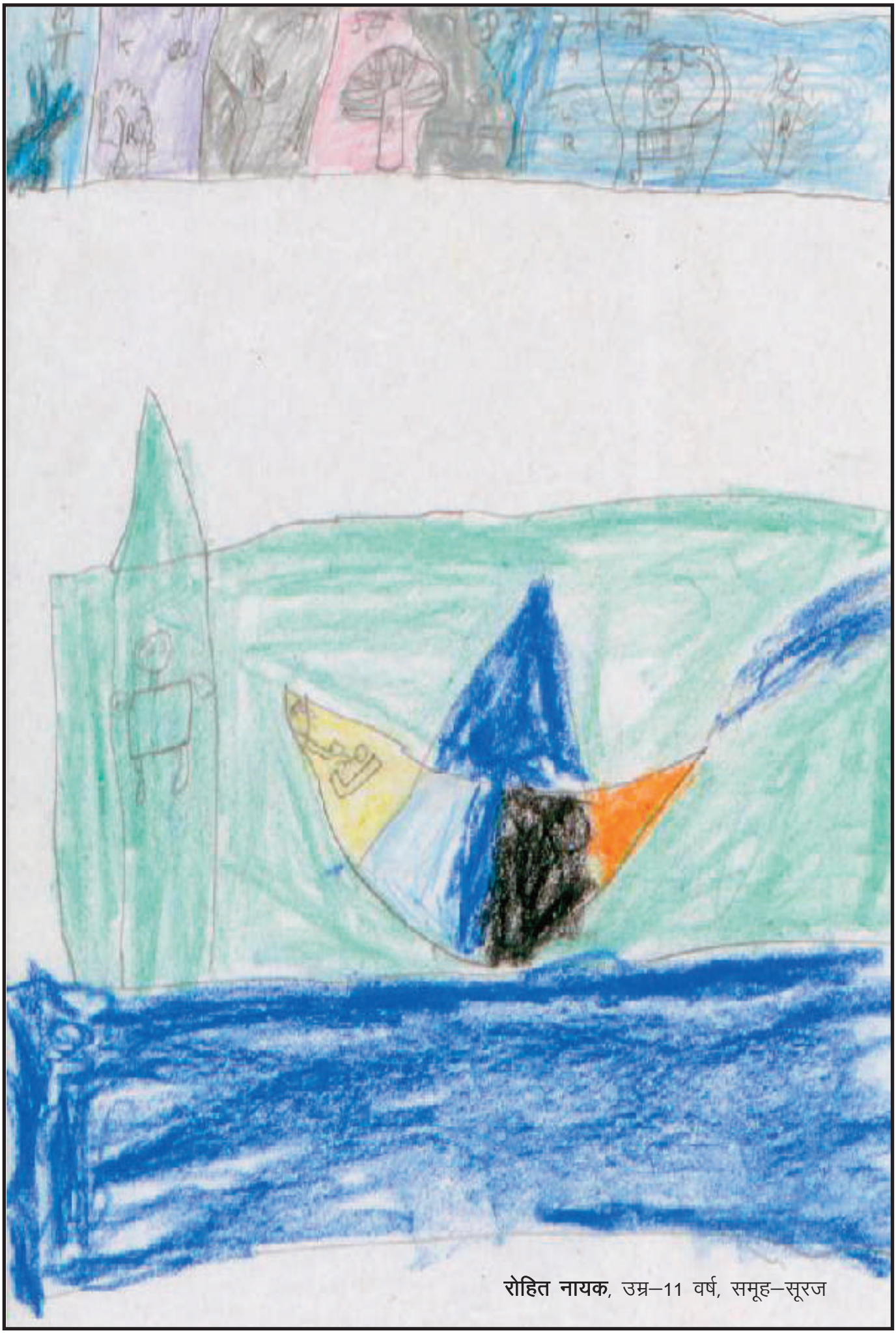

रोहित नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–सूरज